ज्ञानरंजन की कहानियों में 'मानव-संबंध'

(GYANRANJAN KI KAHANIYON MAIN MANAV SAMBANDHA)

एम.फिल. हिंदी उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबंध

सत्र- 2014-15

शोधार्थी

शिंदे संतोष सखाराम

पंजीयन संख्या : 2014/02/215/008

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

साहित्य विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

पोस्ट – हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा -442005 (महाराष्ट्र)

घोषणा पत्र

मैं **शिंदे संतोष सखाराम घोषणा** करता हूँ कि हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में **सत्र 2014-15** के अंतर्गत एम.फिल. हिंदी उपाधि हेतु लघु शोध प्रबंध **"ज्ञानरंजन की कहानियों में मानव-संबंध"** विषय पर **डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी** के नियमित शोध-निर्देशन में मैंने अपना लघु शोध प्रबंध पूरा किया है।

यह मेरा पूर्णत: मौलिक कार्य है तथा मेरे संज्ञान में इसे अंशत: या पूर्णत: इस विश्वविद्यालय या किसी अन्य संस्थान में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

शोधार्थी

शिंदे संतोष सखाराम
एम.फिल. हिंदी
हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग
पंजीयन संख्या 2014/02/215/008

भूमिका

कहानी सामाजिक जीवन के प्रत्यक्षीकरण की प्रतिलिपि है। सामाजिक जीवन की समस्त गतिविधियों को कहानीकार अपनी लेखनी के द्वारा समाज के सामने रखता है। साठोत्तरी हिंदी कहानियों में समाज, परंपराएं, रूढियाँ, अंधविश्वास, स्त्री-पुरुष संबंध, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं वैज्ञानिक विचारों में नवीनता की स्पष्ट छाप मिलती है। समसामयिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आज मानवीय संबंधों का स्वतंत्र, समर्थ रूप उभर कर आ रहा है। उसके प्रत्येक रूप को प्रतिबिंबित करने में साठोत्तरी कहानी सर्वथा सक्षम है।

सातवें दशक की कहानियों में स्थिति और संबंधों की धारणा में परिवर्तन हुआ, इसीलिए संबंधों के यथार्थ का चित्रण इस दशक की कहानियों में नयी कहानी के कुछ भिन्न है। 'नयी कहानी' में संबंधों में द्वंद्व झलकता है, वहीं साठोत्तरी कहानियों में मानव-संबंध को स्पष्ट उजागर किया है। कहानी मूलत: समाज का प्रतिबिंब है। समाज के परिवर्तन के साथ ही नई संवेदना को व्यक्त कर पाने की क्षमता के निर्माण के लिए उसका परिवर्तित होना अनिवार्य होता है। अत: कहानी में मानव की बदलती स्थिति का सूक्ष्म चित्रण हुआ है। जहाँ बदलते मानवीय संबंधों को वाणी दी गई है। आज समाज में हम अपने आसपास में मानवीय संबंधों को बिखरते हुए देखते हैं संबंधों में बदलाव, टूटन आदि दिखाई पड़ता है। पुराने मूल्य बदलते हुए दिखाई देते हैं। इसी मानवीय संबंधों के बदलाव और विघटन को कहीं कहानीकारों ने अपनी कहानियों में रेखांकित किया है। साठोत्तरी कहानियों का अध्ययन करने के पश्चात मेरे मन में भी मानवीय संबंधों के टूटने, बिखरने आदि के बारे में सवाल उठने लगे। यहीं मानवीय संबंधों के बदलाव और विघटन को ज्ञानरंजन ने अपनी कहानियों में दिखाया है। इसीलिए मेरी

'ज्ञानरंजन की कहानियों में मानव संबंध' शीर्षक के अंतर्गत शोध कार्य करने की इच्छा जागृत हुई।

ज्ञानरंजन की अधिकतर कहानियों में मानवीय संबंधों के बदलाव और विघटन का बोध होता है। यह महज संबंधों की कहानियाँ नहीं है बल्कि इनमें आज के व्यक्ति की मानसिकता और चिंता भी संलग्न है। पारिवारिक संबंधों में माता-पिता के संबंध के साथ-साथ अन्य संबंधों में बदलाव होता है। बदलाव की यह प्रकिया साठ के बाद परिवारों में भी देखी जा सकती है। संबंधों का यह बदलाव बड़ी तेजी के साथ उभरा है। पिता-पुत्र, माता-पुत्र, भाई-बहन, भाई-भाई, चाचा-भतीजे आदि के संबंधों में भी यह बदलाव रेखांकित किया जा सकता है।

समकालीन सामाजिक संदर्भ में उपर्युक्त तथ्य की सच्चाई को झुठलाया नहीं जा सकता। आज पुराने मूल्यों एवं आदर्शों का विरोध करने का भावबोध ही अनुभूति की प्रामाणिकता को इंगित करता है। यहाँ पुरानी और नई पीढ़ी का वैचारिक संबंधों पर टकराव दिखाई देता है। उन्हें उनके सही और वास्तविक रूप में पकड़ने की कोशिश ही ज्ञानरंजन की कहानियों का मूल कथ्य है। यही कारण है कि मैंने अध्ययन के लिए ज्ञानरंजन के कहानी संग्रहों में से 'सपना नहीं', और 'प्रतिनिधि कहानियाँ' को आधार बनाया।

'ज्ञानरंजन की कहानियों में मानव-संबंध' शीर्षक के अंतर्गत आज समाज में किस तरह मानव-संबंध टूट, बिखर रहे हैं। बदल रहे हैं। यह बताने का प्रयास किया है। अपनी सुविधा के लिए इस विषय को चार अध्यायों में विभक्त करते हुए प्रथम अध्याय 'ज्ञानरंजन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' में ज्ञानरंजन का जीवन परिचय, साहित्यिक विकास, समकालीन कहानीकारों में ज्ञानरंजन, ज्ञानरंजन की रचना दृष्टि आदि को उजागर करने का प्रयास किया।

द्वितीय अध्याय 'ज्ञानरंजन की कहानियों में जीवनगत संघर्ष' में सातवें दशक के शुरू होने के साथ नयी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ उभरकर आयी जिनके कारण पुराना ढाँचा बिलकुल चरमरा गया। रोटी, कपड़ा और मकान व्यक्ति की तीन आवश्यकताएं हैं, तीनों ही अर्थ पर आधारित हैं। 'अर्थ' से मनुष्य का जीवनयापन होता है। इसीलिए लोग आर्थिक संघर्ष करते हुए दिखाई देते हैं। यह प्रक्रिया आज भी जारी है। वर्तमान समय में मानव जीवन आर्थिक, नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों और धारणाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन के कारण विभिन्न सवालों समस्याओं तथा विचार संघर्षों से प्रभावित हैं। इसी संघषों को उजागर करने का प्रयास किया।

तृतीय अध्याय 'ज्ञानरंजन की कहानियों में मानव संबंध' में सामाजिक और पारिवारिक जीवन में बदलाव आने से आत्मपीड़न, विसंगति, मानसिक तनाव, टूटन, ऊब, बिखराव आदि विकृतियों को दिखाया। ज्ञानरंजन की कहानियों के माध्यम से माता, पिता, भाई, बहन से अलग होते हुए आज के आदमी को चित्रित किया है। मानवीय संबंधों में आए हुए विघटन या बदलाव को, जिसमें पारिवारिक संबंध हो या सामाजिक, इन्हें बड़े सूक्ष्म तरीके से रेखांकित किया है।

चतुर्थ अध्याय 'ज्ञानरंजन की कहानियों में भाषा और शिल्प' में उनकी कहानियों में भाषा और शिल्प का किस तरह से प्रयोग होता है। इसे उजागर करने का प्रयास किया।

अंत में प्रस्तुत लघु शोघ प्रबंध का निष्कर्ष रूप में उपसंहार प्रस्तुत करते हुए शोध में जिन पुस्तकों की सहायता ली गई उनका विवरण संदर्भ सूची में दिया गया है।

किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिए किसी न किसी का सहयोग प्राप्त होता है, उनके सहयोग के बिना कार्य संभव नहीं हो पाता। अत: सर्वप्रथम मैं अपने शोध निर्देशक डॉ.

अशोक नाथ त्रिपाठी का बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे इस विषय पर स्वतंत्र रूप से कार्य करने की आजादी दी और समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन करते रहे। इस शोध विषय पर कार्य करने के लिए सहयोग प्रदान करने हेतु मैं विभागाध्यक्ष प्रो. सूरज पालीवाल जी का एवं विभाग के अधिष्ठाता प्रो. के.के. सिंह का भी आभारी हूँ। साथ ही विभाग के समस्त अध्यापक और कर्मचारियों का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे शोध कार्य करने की प्रेरणा एवं सहयोग प्रदान किया।

इस कार्य को पूरा करने में सहायता प्रदान करने हेतु मैं ज्ञानरंजन जी का हृदय से आभारी हूँ।

मैं अपने माता, पिता एवं भाई, बहन का भी बहुत आभारी हूँ जिन्होंने संघर्षमय जीवनयापन करते हुए मुझे विद्यार्जन करने की प्रेरणा दी जिसके कारण इस शोध कार्य को पूर्ण कर सका। मैं अपने सहपाठी एवं उन सभी मित्रों का आभारी हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से शोध संबंधित प्रश्नों पर विचार-विमर्श कर लिखने की प्रेरणा प्रदान की।

अनुक्रमणिका

पृ.सं.

भूमिका **i-iv**

प्रथम अध्याय: ज्ञानरंजन व्यक्तित्व एवं कृतित्व **01-30**

1.1 ज्ञानरंजन का जीवन परिचय
1.2 ज्ञानरंजन का साहित्यिक विकास
1.3 समकालीन कहानीकारों में ज्ञानरंजन
1.4 ज्ञानरंजन की रचना दृष्टि

द्वितीय अध्याय : ज्ञानरंजन की कहानियों में जीवनगत संघर्ष **31-52**

2.1 सामाजिक संघर्ष
2.2 आर्थिक संघर्ष :
2.3 राजनीतिक संघर्ष:

तृतीय अध्याय : ज्ञानरंजन की कहानियों में मानव संबंध **53-77**

3.1 पारिवारिक संबंध :
3.2 सामाजिक संबंध
3.3 संबंधों में जीवन के प्रति रूझान :

चतुर्थ अध्याय : ज्ञानरंजन की कहानियों में भाषा और शिल्प **78-89**

4.1 भाषा
4.2 शिल्प

उपसंहार **90-92**

संदर्भ ग्रंथ-सू **93-94**

उपसंहार

कहानी युग एवं समय सापेक्ष होती है। समसामयिक परिवेश की वास्तविकता को रेखांकित करते जाना ही उसकी सार्थकता है। स्वातंत्र्योत्तर कहानी मनुष्य के जीवन से जितनी जुड़ी है उतनी साहित्य की कोई अन्य विधा नहीं जुड़ पायी है। स्वतंत्र भारत की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों में तेजी से परिवर्तन आया है और हिंदी कहानी में उसकी समस्त गतिशीलता को अभिव्यक्त किया गया है।

ज्ञानरंजन ने भी अपनी कहानियों में स्वतंत्र भारत की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियों एवं संबंधों में आए परिवर्तन को रेखांकित किया है। ज्ञानरंजन साठोत्तरी पीढ़ी के अग्रणी कहानीकार के रूप में जाने जाते हैं। साठोत्तरी कहानी की सबसे बड़ी पहचान उसकी बदलती संवेदना है। संयुक्त परिवार की प्रथा प्रारंभ से ही भारतीय समाज व्यवस्था का प्रमुख आधार रही है। पाश्चात्य शिक्षा के विकास तथा आर्थिक संघर्ष के कारण यह प्रथा टूट रही है। भारतीय समाज में मानवीय संबंधों के विघटन का बड़ा एवं महत्वपूर्ण कारण आर्थिक संघर्ष भी है। यही मानवीय संबंधों के विघटन को ज्ञानरंजन ने अपनी कहानियों में दिखाया है। ज्ञानरंजन की कहानियों की विषयवस्तु काल्पनिक न होकर, समाज में घटित घटना तथा लेखक के जीवनानुभव से ली गई है। उनकी कहानियाँ आज के समाज, परिवेश से जुड़ी हुई कहानियाँ हैं। प्रगति एवं परंपरा दोनों से कहानीकार का अटूट संबंध रहा है इसी कारण स्वातंत्र्योत्तर गतिविधियों, परिस्थितियों का प्रतिफलन इनकी कहानियों में मिलता है। पुरानी तथा नयी पीढ़ी के वैचारिक संघर्ष को भी ज्ञानरंजन ने बड़े सूक्ष्म तरीके से उजागर किया है।

ज्ञानरंजन ने अपनी कहानियों में पारिवारिक तथा सामाजिक आपसी संबंधों को बड़े सूक्ष्म तरीके से दर्शाया है। औद्योगिकरण एवं नगरीकरण के संत्रास को झेलने वाले ज्ञानरंजन

के पात्र संबंधों की दरार के शिकार है। वे पूंजीवादी व्यवस्था से प्रपीडित मानव मूल्यों की छटपटाहट को अभिव्यक्त करते हैं। उस दौर में परिवार विघटित हो रहे थे। परिवार व्यवस्था की पीढियों से स्थापित मान्यताएं ध्वस्त हो रही थी। व्यक्ति अपने ही आवृत्त में बंदी होकर रहने लगा था। यहाँ तक कि व्यक्ति अपने घर के प्रति भी अब संवेदनशील नहीं रहा था। इसी व्यक्ति को ज्ञानरंजन ने अपनी कहानियों में दिखाया है।

ज्ञानरंजन ने अपनी कहानियों में मध्यवर्गीय पात्रों की विसंगति, असंतोष, बेचैनी, कुंठा संत्रास, अजनबीपन और अकेलेपन को चित्रित किया है। समकालीन यथार्थ पर ज्ञानरंजन की मजबूत पकड़ है। सहज मानवीय संवेदना उनकी कहानियों के केंद्र में है।

शुरुआत में ज्ञानरंजन जितना परिवार केंद्रित होते हैं, व्यक्तिगत-पारिवारिक संबंधों के आधार बनाकर कहानी रचते हैं, बाद में वह परिवार से आगे सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों को भी अपनी कहानियों में दर्शाते हैं।

ज्ञानरंजन ने अपनी कहानियों के माध्यम से माता-पिता, भाई, बहन से अलग होते हुए आज के आदमी को चित्रित किया है। मानवीय संबंधों में आए हुए विघटन या बदलाव को, जिसमें पारिवारिक संबंध हो या सामाजिक, इन्हें बड़े सूक्ष्म तरीके से रेखांकित किया है। वर्तमान युग में पारिवारिक संबंधों में व्यापक परिवर्तन दृष्टिगत होता है। जिसके कारण परंपरागत मान्यताएं अब क्षीण होती नजर आ रहीं है। पारिवारिक संबंधों में संघर्ष, तनाव आदि दिखाई पड़ता है।

परिवार में पुरानी और नयी पीढ़ी में वैचारिक अंत के आधार पर पिता-पुत्र के संबंधों में दरार पड़ने लगी है। पिता-पुत्र का संबंध पहले की तरह न होकर बराबरी का हो गया है। संतान माता-पिता को अपनी आकांक्षाओं के अनुरूप सहायक न पाकर स्वच्छन्द तथा

विद्रोही हो जाती है। इस तरह ज्ञानरंजन की कहानियों में पारिवारिक संबंधों में टकराव दिखाई देता है।

ज्ञानरंजन की कहानियाँ अपने समय की निर्मिति हैं। उन्होंने समाज में घटित घटनाओं को कहानियों के माध्यम से रेखांकित किया। इसीलिए न केवल साठोत्तरी हिंदी कहानी बल्कि संपूर्ण हिंदी कहानी जगत में ज्ञानरंजन की कहानियों की विशिष्ट पहचान है।

ज्ञानरंजन की कहानियाँ आज के व्यक्ति की मानसिकता की स्थितियों की कहानियाँ हैं। वह अलगाव और अकेलेपन की परिवेशजन्य संरचनाओं को व्यक्ति, परिवार, करीबी और बाहरी संबंध, संस्थाओं और बाह्यजगत के गहरे जीवन संदर्भों के जरिये पहचानते हैं। उनकी कहानियों में परिवेश के बीच आम आदमी की जिंदगी तथा उसकी उलझनों में जितीविषा की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। आधुनिक जीवन के संदर्भ में पुराने नए मूल्यों तथा पीढियों के संघर्ष, संयुक्त परिवार का विघटन, टूटता हुआ दांपत्य जीवन, सेक्स को लेकर नैतिकता-अनैतिकता का द्वंद्व, वर्तमान जिंदगी में आए अजनबीपन, घुटन, पीड़ा आदि को सहज ढंग से अभिव्यक्ति मिली है।

वर्तमान समय में हम देखते हैं समाज में परिवार, व्यक्ति और व्यक्तित्व की टूटन-घुटन आदि की समस्याएं फैली हुई है। इसीलिए ज्ञानरंजन की कहानियाँ आज समय सापेक्ष दिखाई देती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ सूची

1. ज्ञानरंजन. (1997). सपना नहीं. नई दिल्ली. राधाकृष्ण प्रकाशन
2. ज्ञानरंजन. (2008). प्रतिनिधि कहानियाँ. इलाहाबाद. राजकमल प्रकाशन

संदर्भ सूची

1. ज्ञानरंजन. (1971). यात्रा. इलाहाबाद. रचना प्रकाशन
2. ज्ञानरंजन. (2002). कबाड़खाना. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन
3. तिवारी, डॉ. रामचंद्र. (2014). हिंदी का गद्य साहित्य. वाराणसी. विश्वविद्यालय प्रकाशन
4. तिवारी, नरनारायण. (2005). हिंदी कहानी में प्रकृति-चित्रण. मथुरा. अमर प्रकाश
5. द्विवेदी, सुनील कुमार. (2010). मध्यवर्गीय समाज और ज्ञानरंजन, कोलकाता, मानव प्रकाशन
6. पाटील, डॉ. हणमंतराव. (2005). भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा. कानपुर. विद्या प्रकाशन
7. पाण्डेय, गणेश. (1999). आठवें दशक की हिंदी कहानी में ग्रामीण जीवन. नई दिल्ली. राधा पब्लिकेशन्स
8. प्रसाद, डॉ. राम. (1995). साठोत्तरी हिंदी कहानी में पात्र और चरित्र चित्रण. इलाहाबाद. जयभारती प्रकाशन
9. बंसल, बीना. (2001). नई कहानी में आर्थिक संघर्ष. दिल्ली. ईशा ज्ञानदीप
10. मधुरेश. (2014). हिंदी कहानी का विकास. इलाहाबाद. सुमित प्रकाशन
11. मिश्र, डॉ. सत्यप्रकाश. (1978). ज्ञानरंजन की कहानियाँ. 'इतिहास की अनिच्छुक शक्तियों' से आदमी के संघर्ष की व्यथा- कथाएँ. इलाहाबाद. नई कहानी प्रकाशन

12. मोहन, डॉ. नरेन्द्र. (1996). बीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध : हिंदी कहानी. दिल्ली. कादंबरी प्रकाशन
13. रज़ा, जाफर. (2008). प्रेमचंद : कहानी का रहनुमा. इलाहाबाद. लोकभारती प्रकाशन
14. रामप्रसाद. (1995). साठोत्तरी हिंदी कहानी में पात्र और चरित्र-चित्रण. इलाहाबाद. जयभारती प्रकाशन
15. राय, गोपाल. (2011). हिंदी कहानी का इतिहास 2. नयी दिल्ली. राजकमल प्रकाशन
16. शर्मा, डॉ. संजुल. (2013). ज्ञानरंजन की कहानियाँ परिवर्तित दृश्यपटल का मनुष्य. जबलपुर. विनायक प्रकाशन
17. श्रीवास्तव, परमानंद. (2012). कहानी की रचना प्रक्रिया. इलाहाबाद. लोकभारती प्रकाशन
18. सिंह, डॉ. मंजुलता. (1994). हिंदी कहानी का विकास एवं युगबोध. दिल्ली. पराग प्रकाशन
19. सिंह, नामवर. (2008). कहानी नयी कहानी. इलाहाबाद. लोकभारती प्रकाशन
20. सिंह, विजयमोहन. (2002). आज की कहानी. नई दिल्ली. राधाकृष्ण प्रकाशन
21. सिंह, विजयमोहन. (2005). बीसवीं शताब्दी का हिंदी साहित्य. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन

पत्रिका

1. भारद्वाज, प्रेम. सिंतबर. 2012. पाखी
2. शर्मा, रामविलास. (1998). सं. निमौही देश. अंक 45. जुलाई-सितंबर. पंचकूला. आधार प्रकाशन

वेबसाइट :

www.hindisamay.com